No. of Printed Pages : 3

ई.एच.डी.-1

07165

स्नातक उपाधि कार्यक्रम
सत्रांत परीक्षा
दिसम्बर, 2014

ऐच्छिक पाठ्यक्रम : हिन्दी
ई.एच.डी.-1 : हिन्दी गद्य

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए । **प्रथम** प्रश्न अनिवार्य है ।*

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं ***तीन*** की प्रसंग-सहित व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) मैं ईश्वर को नहीं मानता, मैं पाप को नहीं मानता, मैं दया को नहीं समझ सकता, मैं उस लोक में विश्वास नहीं करता । पर मुझे अपने हृदय के एक दुर्बल अंश पर श्रद्धा हो चली है । तुम न जाने कैसे एक बहकी हुई तारिका के समान मेरे शून्य में उदित हो गई हो । आलोक की एक कोमल रेखा इस निविड़ तम में मुस्कराने लगी ।

(ख) उस अनर्थ की कल्पना ही से मुंशीजी के रोएँ खड़े हो गए और कलेजा धक्-धक् करने लगा । हृदय में एक धक्का-सा लगा । अगर इस ज्वर का यही कारण है, तो ईश्वर ही मालिक है । इस समय उनकी दशा अत्यंत दयनीय थी । वह आग जो उन्होंने अपने ठिठुरे हुए हाथों को सेंकने के लिए जलाई थी, अब उनके घर में लगी जा रही थी । इस करुणा, शोक, पश्चात्ताप और शंका से उनका चित्त घबरा उठा ।

(ग) भला पूछिए इन अकल के ठेकेदारों से कि क्या लड़कों की पढ़ाई और लड़कियों की पढ़ाई एक बात है । अरे, मर्दों का काम तो है ही पढ़ना और क़ाबिल होना । अगर औरतें भी वही करने लगीं, अँग्रेज़ी अख़बार पढ़ने लगीं और 'पॉलिटिक्स' वग़ैरह पर बहस करने लगीं तब तो हो चुकी गृहस्थी । जनाब, मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं, शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं ।

(घ) मेरे हृदय के गहन अंतस्तल से निकली हुई यह मूक स्वीकृति आज बोल रही है । मैं पुरुष हूँ ? नहीं, मैं अपनी आँखों से अपना वैभव और अधिकार दूसरों को अन्याय से छीनते देख रहा हूँ । और मेरी वाग्दत्ता पत्नी मेरे ही अनुत्साह से आज मेरी नहीं रही । नहीं, यह शील का कपट, मोह और प्रवंचना है । मैं जो हूँ, वही तो नहीं स्पष्ट रूप से प्रकट कर सका ।

(ङ) सहजात वृत्ति अनजानी स्मृतियों का ही नाम है । स्वराज होने के बाद स्वभावतः ही हमारे नेता और विचारशील नागरिक सोचने लगे हैं कि इस देश को सच्चे अर्थ में सुखी कैसे बनाया जाए । हमारे देश के लोग पहली बार यह सब सोचने लगे हों, ऐसी बात नहीं है । हमारा इतिहास बहुत पुराना है, हमारे शास्त्रों में इस समस्या को नाना भावों और नाना पहलुओं से विचारा गया है ।

2. 'उसने कहा था' कहानी के आधार पर लहना सिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए । *16*

3. 'निर्मला' उपन्यास के संरचना-शिल्प पर विचार कीजिए । *16*

4. 'कौमुदी महोत्सव' एकांकी के आधार पर चाणक्य का चरित्र-चित्रण कीजिए । *16*

5. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक पर रंगमंच और अभिनेयता की दृष्टि से विचार कीजिए । *16*

6. 'एक था पेड़ और एक था ठूँठ' निबंध की विशेषताएँ बताइए । *16*

7. प्रेमचंद-पूर्व हिन्दी उपन्यास के विकास पर संक्षेप में प्रकाश डालिए । *16*

8. भारतेन्दु-युग (1875 – 1900) में हिन्दी गद्य के विकास का विवरण दीजिए । *16*

9. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणी लिखिए : *2×8=16*

   (क) आत्मकथा और जीवनी

   (ख) 'ध्रुवस्वामिनी' में नारी-जागरण का स्वर

   (ग) 'आकाशदीप' कहानी की भाषा

   (घ) निबंध में लेखकीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति